



The Trumpet

Issue 25 | Nov-Dec 2013

Aam Aadmi Party Sachin Tendulkar Catching Fire Solar Flares Milkha Singh NSA Spying Bayern Munich Miley Cyrus Mars
 Youreka Camps Nelson Mandela Bashar al Assad Lance Armstrong Paul Walker MIT Cyberoam Old Uniforms See More MIT
 Anna Hazare Cristiano Ronaldo Man of Steel Russian Meteor Saina Nehwal Chinese Smog FIFA Confederations Cup Lokpal
 President Obama Ballon d'Or Iron Man 3 Nobel Prize How I Met Your Mother New Hostel Syria Chelsea Despicable Me 2
 The Hobbit: The Desolation of Smaug Founder's Day Kenyan Mall Attack United Nations Twerking Xbox One Playstation Four
 Facebook Hashtag Of Monsters and Men Avicii Vladimir Putin Sharkeisha Pope Francis LGBT Rights Aarushi Murder Case
 Narendra Modi Arms Trade Treaty Boston Bombings Edward Snowden Bradley Manning Typhoon Haiyan The Bali Package
 Iranian Nuclear Programme Prince George Hugo Chavez Margaret Thatcher Douglas Engelbert iPad Air Sonia Gandhi Brian
 CIA **we'll miss you 2013** The Trumpet says goodbye to an year filled with unexpected twists
 NSA and turns. So long, 2013! We will surely miss you as you finally depart
 US Government Shutdown Google Glasses Lionel Messi Nicklas Bendtner The Great Gatsby Vines Memes Doge iPhone 5S
 Indian Space Research Organizations Comedy Nights Vishwanatha Anand Magnus Carlsen Indian Grand Prix Chennai Express
 MaximBad Rajasthan Royals Shaluntala Devi Breaking Bad Grand Theft Auto Five Higgs Boson Particle The Fryscraper
 Family Guy Model United Nations Jennifer Lawrence Disney Movies Linkin Park Youtube Doctor Who Snowy Middle East
 Bad luck Brian One Republic Grumpy Cat Snow Storms Jean Claude Van Damme The House of Hades Russian Roulette Swag
 Counting Stars Manchester United Sir Alex Ferguson Jose Mourinho Angela Merkel Devyani Khobragade Chilean Elections
 December Fog Pewdiepie 41 Mega Pixel Nokia Lumia Arnab Goswami Kashmir Telangana Arvind Kejriwal Windows 8 iOS 7
 Maverick X The International Year of Water Cooperation The Ashes Gravity American Hustle The Big Bang Theory Spock

All right folks, we'll call it an year then. Pun intended!

As 2013 draws to an exciting close, you shouldn't be too surprised if you walk in on people all set on making new resolutions for the coming year. However, the irony surfaces when one compares the number of resolutions made to number of resolutions actually upheld!

So why not do something different? Instead, why not pledge to remember fondly all the memories that we made in 2013? All those time that we'll be leaving behind!

So here's to 2013. Here's to remembering our traditions, to finding warmth in the best moments of the passing year, and to embrace the new oneth a smile on our faces!

We bring you the November-December joint issue of the Trumpet. We'll miss you, 2013.

Aritro Bose

Student Editor



The Trumpet

The Year End

As 2013 draws to an end, I look back and wonder; have I achieved what I had set out to at the beginning of the year?

As a little girl, the year seemed long. So many days, 365 in all! But, now the year has probably shrunk. Three hundred and sixty five days aren't enough. I have so much to do!

But, first of all, I would like to thank all those people who have made this year yet another wonderful chapter of my life, such a treasured one! No, of course it's my family and my friends.

But here I pay a tribute to my students!

Every moment I have spent with them I have learned a lesson no book would have taught me.

"I have done my homework, but I forgot to get my notebook," probably means that *"Hey, this lady gave some assignment some time back and oh I have forgotten to do it again, damn!"*

"I brought my notebook, but somebody picked it from the table". Of course, the little birdie decided to give a few lessons on grammar to its chicks and found your notebook indispensable.

As a teacher, I have often speculated "to believe or not to believe". Most of the times, the chances are that student might be trying to pull the wool over the teachers' eyes. The poor soul has no choice!

"That's an old tale...can't you come up with a more novel excuse?" I retort exasperatedly. My eyes spark with embers of wrath and the little lamb feels he's about to be slaughtered. A quivering voice, summoning up courage, squeaks from the back, "But, ma'am, Rahul is telling the truth." Well, he rarely does!

That's when I feel like a monster. Shouldn't I give him the benefit of doubt? Even the law is compassionate enough. *Patience, my dear*, prompts my inner voice. My BP plummets and I feel less like an enraged bull! *Give him another chance*, cries my soul. A leader leads by example.

I'm teaching him to be angry and impatient, while he has given me an invaluable lesson on compassion and patience!

Thank you, dear students, for a lesson well taught .

Reena Verma



The Trumpet

एक मुलाकात श्री मिलखा सिंह के साथ

उर्दू के महान शायर मोहम्मद इकबाल ने कहा था -
“हजारों साल, नरगिस अपनी बेनूरी पे
रोती है।

बड़ी मुश्किल से होता है, चमन में
दीदावर पैदा॥”

जेनेसिस ग्लोबल स्कूल, नौएडा में 23 नवम्बर 2013 को खेल दिवस के अवसर पर, मुख्य अतिथि के रूप में फ़लाईंग किंग श्री मिलखा सिंह की उपस्थिति, किसी व्यक्ति-विशेष के रूप न होकर ठीक उस तरह थी जैसे हमारे विद्यालय में खेल की दुनियाँ का विश्वविद्यालय स्वयं चलकर आया हो। आज श्री मिलखा सिंह केवल किसी व्यक्ति का नाम नहीं, अपितु उनके जीवन में आए झंझावातों और कठोर परिश्रम से की गई तपस्या ने, उनके विराट व्यक्तित्व को स्वयं में एक संस्थान बना दिया है।

श्री मिलखा सिंह का जन्म सन 1935 में, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गोविन्दपुरा नामक गाँव में हुआ था। मुख्य अतिथि श्री मिलखा सिंह ने जेनेसिस विद्यालय के मुख्य सभागार (एम0पी0एच0 हाल) में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अपने जीवन में आए संघर्षों को जीवंत किया।



अपने इतिहास के पृष्ठों को याद करते हुए श्री मिलखा सिंह ने बताया कि:

‘मैं मिलखा सिंह, जेनेसिस ग्लोबल विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रमोद शर्मा, स्पोर्ट्स डाइरेक्टर श्री गुरवीर सिंह अन्य अतिथि-आगन्तुक और प्यारे बच्चों का अभिवादन करता हूँ। प्यारे-बच्चो देश में, मैं जहाँ-जहाँ भी बुलाया जाता हूँ वहाँ मैं हिन्दी भाषा में बोलना ही पसन्द करता हूँ। हिन्दी-भाषा में अपने विचार प्रस्तुत करने में मुझे खुशी मिलती है। देश के विभाजन के बाद की अफरा-तफरी में, मेरे सामने मेरे माता-पिता का कत्ल कर दिया गया, वो कटु अनुभव मुझे आज भी रुला देते हैं।

आज मेरा मानना है, जिस इन्सान में अनुशासन और संघर्ष करने का आत्मबल है, वह व्यक्ति ही ज़मीन से उठकर आसमान को छू लेता है।



The Trumpet

एक मुलाकात श्री मिलखा सिंह के साथ

अपने बचपन में मैंने गरीबी को बहुत नज़दीक से देखा है, उस गरीबी को मैंने जीया है। उस समय न खाने को, न रहने को और रोजगार(नौकरी) की भी कोई व्यवस्था नहीं थी। एक बार रेल में शाहदरा से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन की यात्रा करते समय, मैं बिना टिकट यात्रा करता हुआ पकड़ा गया। उस समय मेरे पास टिकट के लिए दो पैसे भी नहीं थे, सच्चाई तो यह है कि खाने की व्यवस्था तक मेरे पास नहीं थी, तो टिकट के लिए दो पैसे की व्यवस्था कहाँ से होती? टिकट न होने के कारण मुझे जेल जाना पड़ा। मेरे जेल जाने पर मेरे रिश्तेदारों को प्रसन्नता हुई, वे सोचते थे चलो अच्छा हुआ कुछ भार तो कम हुआ, मेरी बहन चुपके से मुझे एक सूखी रोटी और प्याज पोटली में बंद करके, गाँव के बाहर चुपके से दे आती थी। उन पलों को याद करके अब भी मेरी आँखें नम हो जाती हैं। मेरी बहन मेरे जेल जाने से बहुत दुखी थी, मुझे जेल से बाहर लाने में मेरी बहन की बड़ी भूमिका रही उसने अपने कानों की बालियाँ बेचकर मुझे जेल से बाहर निकलवाया था।’

‘लगभग बाईस वर्ष की अवस्था में, सन 1951 में तीसरे प्रयास में, भारतीय सेना में भर्ती होने के बाद ही मुझे दौड़ और उसके महत्व के विषय में पता चला, तभी मैं जान पाया कि 100 मीटर, 200 मीटर,

400 मीटर की दौड़ क्या होती है और इसका क्या महत्व है? सेना में मेरे प्रशिक्षक (गुरु) मुझे प्रतिदिन 10 मील लगभग 15 किलोमीटर दौड़ाते थे। एक दिन जब मैं सोया हुआ था तब ईर्ष्या के कारण कुछ लड़कों ने लाठी-डंडों से मेरी पिटाई की और मुझे घायल कर दिया, क्योंकि वे चाहते थे कि मैं उस प्रतियोगिता में भाग न ले सकूँ। मेरे प्रशिक्षक और अन्य साथियों ने मेरी घायल अवस्था को देखकर सलाह दी कि इस अवस्था में मुझे दौड़ना नहीं चाहिए, परन्तु मैं फिर भी दौड़ा और पूरी बटालियन में प्रथम आया, तभी मेरे प्रशिक्षक (गुरु) ने मुझे बताया कि मैंने उस दौड़ में राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़ दिया है।

मैलबर्न ओलंपिक से वापस आते समय मैंने धरती माता की सौगंध खाई कि जब तक मैं 200 और 400 मीटर की दौड़ में विश्व-रिकार्ड नहीं तोड़ दूँगा, तब तक चैन से नहीं बैठूँगा।





The Trumpet

एक मुलाकात श्री मिलखा सिंह के साथ

सन 1958 में कार्डिफ (वेल्स) के कामनवेल्थ खेलों में 400 मीटर दौड़ में स्वर्णपदक जीतने के बाद वहाँ की महारानी मुझे स्वर्ण-पदक पहनाने आईं, तब तिरंगा झंडा लहरा रहा था भारत के राष्ट्रगान की धुन बज रही थी। तिरंगे को लहराते देखकर मेरी आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे। मैं स्वयं पर गौरवान्वित हुआ और मैंने खुद से ही कहा कि मिलखा आज तूने सच में देश का नाम रोशन कर दिया।

उस समय आश्चर्य की बात यह थी कि लगभग एक लाख लोगों की भीड़ में उस स्टेडियम में मुश्किल से 2 या 3 भारतीय ही थे, तभी भारतीय वेशभूषा में, साड़ी पहने हुए भीड़ में से दौड़ती हुई एक भारतीय महिला मेरे पास आकर बोलीं, मैं भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी हूँ और यहाँ पर भारतीय राजदूत (हाई-कमिश्नर) के रूप में कार्यरत हूँ। मैंने उनके चरण-स्पर्श किए। कामनवेल्थ खेलों में, स्वर्ण-पदक मिलने की अपार प्रसन्नता में पंडित नेहरूजी की बहन पंडित विजयलक्ष्मी ने मुझसे कहा- 'मिलखा आज आपने अपने देश का नाम रोशन कर दिया है, आज आपने तिरंगे की शान को बढ़ाया है। आज पूरा देश तुम पर गर्व कर रहा है।' उन्होंने मुझसे पूछा कि पंडित नेहरू जी ने आपसे जानना चाहा है कि इस उपलब्धि के

बाद, आप देश के प्रधानमंत्री से क्या चाहते हैं? उस समय अगर मैं 100-200 एकड़ ज़मीन या दो चार कोठियाँ माँग लेता तो वह सब कुछ मुझे मिल सकता था परन्तु मेरी ऐसी कोई चाहत नहीं थी। मैंने कहा कि इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में पूरे देश में एक दिन के अवकाश(छुट्टी) की घोषणा कर दी जाए।'



‘प्यारे बच्चो, फ़रहान अख़्तर द्वारा बनाई गई फ़िल्म ‘भाग मिलखा भाग’ में बहुत ही उच्चकोटि का अभिनय किया गया है। मैंने उस फ़िल्म को देखा और जब उसमें मेरी बहन या मेरे गाँव का दृश्य आता है तब-तब मैं उन दृश्यों को देखकर बहुत रोया हूँ। मैंने जो भी सफलता अर्जित की या मेरे ऊपर फ़िल्म बनाई गई, उसके पीछे सिर्फ़ और सिर्फ़ कठिन परिश्रम का योगदान है।’



The Trumpet

एक मुलाकात श्री मिलखा सिंह के साथ

मिलखा सिंह के जीवन में संघर्ष साए की तरह साथ रहे। कहा जा सकता है कि आपका संपूर्ण जीवन संघर्षों का पर्याय रहा है। आपके कथन आज की युवा-पीढ़ी के लिए अमृत वर्षा के समान हैं। श्री मिलखा सिंह ने अपने जीवन में राष्ट्रकवि 'दिनकर जी' की पंक्तियों को साकार किया है। जिन्होंने कहा था---

'मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं, सपनों की बातें निगाहों से हटाती हैं।

हौसला मत हार, गिरकर ओ मुसाफिर, ठोकरें इन्सान को चलना सिखाती हैं।'

आज श्री मिलखा सिंह युवाओं के लिए ही नहीं अपितु समस्त भारतवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत (आधार) बने हुए हैं।

श्री मिलखा सिंह का जेनेसिस के विद्यार्थियों को संदेश:

'करो कुछ यूँ करो, जिससे वह करना मान पा जाए,
तुम्हारा देखकर करना, मरों में जान आ जाए।
वह करना क्या हुआ करना, पता जिसका न चल पाया,

गया जग से चला ऐसा, यहाँ जैसे नहीं आया।

कुछ न कुछ करना पड़ा सबको बचा नहीं आज तक कोई,

है करना सार्थक उसका, धरा जिसके लिए रोई॥'

आभार सहित

डा० मनोज शर्मा (हिन्दी-विभाग)



Gravity

A dream once lit his dying mind,
Ah! Soon he'd make his Heavenly climb!
But then Gravity such rang its wretched bell,
That he woke and tumbled down to Hell.

Aritro Bose

X



The Trumpet

Junior School Annual Day

It was, indeed, a beautiful experience to sit through the Annual Day of the Junior School of Genesis. Some weeks back we had witnessed the Founder's Day of the Middle and Senior School followed by the World Disability Day by the Special Needs Children. I have now been watching Genesis functions for the last three years and they are getting better step by step in every way. The interesting thing is that these functions are being designed by the school staff and children only without at many outside professional who in plenty in and around Delhi – and many schools do take their help. How much better will these functions become now? Time alone will tell. I am certainly optimistic because I find honesty, enthusiasm and sense of joy among the people here. This time I could see some inputs from the parents, too. Mark you, Genesis is only a three year old school..

Last year, the Junior School had staged 'The Roar of the Jungle' with great success and now came 'Odyssey' and 'Jugni'. During this programme of two hours, the whole Junior School, including the staff, had descended on the stage with mikes and props and lights without even a minor mishap.

Thank God! Genesis has separated its Junior School function from the Senior Wings. This gives them greater spaces to the junior scholars through fuller time and larger participation. We saw full run of creativity be it the back drop or the change of lights or use of sounds.

Surprising! The function began on time as we did not have to wait for the Chief Guest: There was none. The parents, too, were seated peacefully in time. Without undue fuss, the function started with 'Jugni', the orchestra with almost 50 instrumentalists and singers. It had vigour and variation heightened by a wide range of instruments and a large number of vocalist, almost all below Class Five. The impact was heartwarming and the audience was spell bound.

"Jugni – literal meaning female firefly – is a poetic metaphor of Punjab and serves as the eye through which life and events corresponding to it are viewed. It has also been the mouthpiece of poets through the centuries to comment on all that is of note.

In the last century, Alam Lohar of Pakistan and Asa Singh Mastana of India were the great masters of the musical art of the Jugni.





The Trumpet

Junior School Annual Day

This presentation by the Choir and Orchestra of the Genesis Global School is inspired the version by Arif Lohar, the son of the former, and incorporates a modern musical arrangement where the traditional flavor of the art form is not submerged by meaningless intrusions of the arranger's craft.

Jugni is also the light of the individual soul seeking to merge its identity in the completeness of Infinity. For this it prepares itself tirelessly, through honesty, courage and self-exhortation. It hones itself and tempers its mettle for the final denouement. Very simply, Jugni is the song of the human spirit, shorn of hypocrisy and lip service."

The compeers handled their job effortlessly. There was clarity in their speech, flow in their language and completeness in their content. Their voice carried well to the end of the hall.

This was also an occasion for Genesis to celebrate its authorization of PYP. "It is about knowing where you are in place and time; expressing yourself; discovering and exploring natural and man-made world; organizing resources; sharing the planet with all other living beings, living in harmony and creating a better world to live in."

In this enactment, the PYP scholars and staff took us on an 'Odyssey' through their eyes who are lifelong learners.

It was presented with perfection. You really became part of the PYP programme, true to its

spirit, without a moment of boredom. Scenes after scenes and groups of actors came and went without any hitch. I wonder how these little ones were trained with such perfection. The costumes had colour, texture and design. There were so many dances and such variety of music. It was simply breathtaking. Nothing that goes on in PYP was missing. Nothing was exaggerated. The spirit of tis part of Genesis was unfolded with ease and honesty. Yoga and gymnastic; Konkan and Kongu Tamil folk; Ghoomar and Disco; Modern Age and Zumba; Sadness and Happiness; Anger and Peace were all there and even Jungle Dance were all there

I wonder how such a large army performed with such ease and efficiency. What effort must have gone into not only in executing the plan but even in conceiving it all and scripting the same?

December 07, 2013 is a clear indication that Genesis Global, just a three year old baby has come of age much earlier than expected.

Amar Nath Dar





The Trumpet

Happiness: A Letter

Dear Happiness,
I am reporting to you as a troubled teenager.
I have a problem. I tried finding you but couldn't.

My mom told me that you were the light,
and that I will see you some day.
When will that be?

My dad tells me, you're hope in lost souls,
and that you're the fate among our high goals.
Is that true, Happiness? I hope it is.

People say that you're a gift.
When we die, it's to you we drift.
But Papa says, that I've known you before;
he tells me you're an ecstatic bliss.
You touch my heart when I get a mother's kiss.
Is it true? Is it true?

My mom says you're always here; just invisible.
She tells me, someday, in the very near future,
you will introduce me to your best friend love.
Are you the field of roses in a prairie of life?
Are you the redeemer when we suffer from
strife?

I need you, Happiness! I need you so badly,
and I need you so that I can eat my breakfast
joyfully.

I need you so that I can do my homework
exceptionally.

I need you so that I can talk to my friends
cheerfully.

I need you so that I can sleep peacefully.
And I need you, Happiness,
so that I can find love restlessly.

Like swords and spears, sorrow sears your soul.
I don't want that to be my fate.
Help me, Happiness, help me.
What I want to say today,
is that when misery hits, don't go far away!
Come to me, I'm still searching for you,
Anonymous

Madhumita Kumar
IX

Paradise

Mothers dying, children crying,
In this endless, boundless war,
No one surrendering, no one compensating.
Everyone but shattered and torn!

Where is my Kashmir? The paradise on Earth!
This place I see is worse than hell.
The majestic mountains look down with pity,
The bubbling streams now red with blood,
The chirping birds are deathly silent,
The gentle breeze is just too quiet.

Is this my hometown? The place where I belong?
When will the world extend a helping hand?
Will anyone ever understand?
Will I ever get back,
The happy face of my lovely land?

Zuha Zubair Wani
XII



The Trumpet

Exploratorium

A Unique Philosophy!

How should you spend your time? Well, believe it or not, science has some answers! I was introduced to this unique philosophy of scientific fun on my last vacation. Like all of us, I also planned to have a fun time, and thus went sightseeing in the beautiful city of San Francisco. However, I entered my first destination, a science museum called *Exploratorium* with the intention of moving out as soon as possible to enjoy the rest of the city's many attractions.

Less than a minute spent in that never-ending hall, and already my mind was exclaiming, "Wow!" Was it a museum, a place that displays a collection of artefacts and scientific objects? No way!

It wasn't like any other museum. Instead, it was a playground bursting with cool toys, a huge collection of mirrors, lenses, microscopes, pendulums, cosmic rays, rainbows, lights, and tons of other illusions!

Play and Learn, Play and Learn; the phrase was everywhere. It was a humongous place filled with numerous science games. Whether it be three-year-old kids, or sixty-year-old adults; they were all playing the same games, although very few actually gained success. This was a place with lots of hands-on stuff for kids to experiment with.

I was a commerce student, and I've always seen science students engrossed in their books. I was

so scared then, of reading and learning those scientific formulas and logics! However, here all those formulas and logics are converted into various interesting games, and all you need to do is play!

So, inspired by some kids, I too started to play; thinking that if these kids can do it, then I can too. However, contrary to my expectation, I began losing even the most simplest of pendulum games.

"Ah!" I said, "I have to win!"

And thus started the long series of failed trials, up till the time I finally succeeded. Game after game, I kept going. What an incredible experience it was! I spent around five hours there, and thoroughly enjoyed it all!

What an environment **Frank Oppenheimer** (a brilliant physicist) has built for the society! Children come over to this place for fun every weekend, and just like they'd practice playing basketball or swimming, they simply practice science (probably without realising it too!). Each day is a new revelation for these probable young scientists.

A highly entertaining hands-on introduction to the world of physics, enjoyable for both kids and adults. I would suggest my young readers/scientists to look at the website (<http://www.exploratorium.edu/>) and definitely visit the place as and when possible!

Ruchika Arora Saini

Faculty



The Trumpet

Sports

Football: GGS participated in two football tournaments, in GD Goenka School and the IFB Boca Championship held at Ambedkar Stadium respectively. The team put up a commendable performance, reaching the last four in both cups. Inonita of Class X won honourable mention for his performance.

Cricket: The school team played in the NCR Inter School Cup, and the GD Goenka Inter School Cricket Tournament, reaching the finals at GD Goenka.

We played a friendly against the Saba Karim Genesis Pro Cricket Centre, and won by 36 runs.

Tennis: 22 students participated in the Jaypee Open Junior Tennis Tournament held from 26th to 30th November 2013.

20 students also participated in the Inter School Tennis Tournament held in Genesis Global School in December 2013.

Fencing: Our fencers participated in the 1st Junior State Championship held at N. K. Bagrodia School, Dwarka.

We bagged a gold and silver in the team event, and fencing coach Mr Harpreet Singh won the silver medal in the senior individual category.

Athletics: Our students participated in the 3rd Invitational Inter School Athletics Championship organized by Pathways, Aravali.

Our fine performance was sealed by two gold and three bronze medals in all categories. Raja Udhyan was declared the Best Athlete in U-12 Boys category.

Squash: Five GGS Students went to Agra on 8th December, 2013 for the trials of CBSE team for 59th National School Games 2013. All five were selected in the trials for 59th National School Games 2013; Palak Karnani, Riyana Sharma, Utrara Sinha, Anvita Negi, Natasha Nagar

Basketball: GGS Basketball played against Dehradun Public School in the 3rd NCR Inter School Basketball Tournament held at Genesis Global School on 16th November. Our team lost by 4 points.



Ekta Jha
Sports Co-ordinator



The Trumpet

The Boons of Space Research

It shook the whole world.

It was top-secret; its identity not revealed until its launch.

It amazed, it fascinated, it alarmed.

The first satellite ever to orbit the Earth was fired away at dawn from Russia, whilst spreading fire right up till the other end of the globe; America. The launch of *Sputnik 1* marked the beginning of a new 'Space Age'; a new age of development of many new political, technological, military and scientific programmes.

Today, around 3000 satellites orbit the Earth, man has sent robots to another planet and soon men will be able to walk on another planet as well. These accomplishments have been achieved after many years of research. Tonnes of metals, thousands of gallons of fuel and hundreds of scientists, technicians, researchers and many more components work together to launch a space mission. And when such capital intensive technology is utilized, isn't it justified for the costs to be high as well?

The biggest challenge a space programme actually faces is the public and politics. Every time a new space research programme is announced, people fear it is a waste. But have we ever stopped and looked at the benefits that we have gained through these programmes?

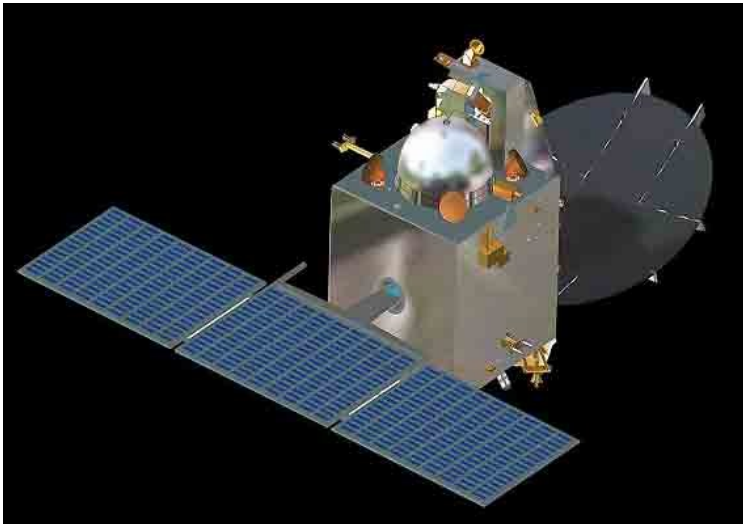
Imagine your life without telephones or mobiles, without television or the internet. These equipment, that have been made available to us only after space research programmes, have become extremely important parts of our life. Be it rescue tools or smoke detectors, life-saving light used to destroy cancerous tumours or artificial heart pumps; they were all developed on the basis of space shuttle fuel pump technology.

But yes, when the coin flips it has another side to it as well. Harassed by climate change, agonized by poverty, plagued by overpopulation, deprived of water and food, our planet today has become a cauldron of problems. Some people argue that before exploring the outside of our planet, we must first explore the problems plaguing Earth and find solutions to them.

However, it's not as if the nations across the globe haven't tried resolving these conflicts. Over the last five years, USA has spent approximately 3.7 trillion dollars on public welfare while a mere (compared to the amount spent on welfare) 797.4 billion dollars were invested in NASA. The amount spent on space research programmes is less than 0.6% of the total budget.



The Trumpet



>> The Mangalyaan as built by the Indian Space Research Organization (ISRO). It cost less than one-tenth of the vehicle built by China, and yet has already set out in orbit, which the Chinese failed to achieve!

If successful, this mission will quantitatively determine if there is indeed life on Mars, or if there ever was.

Recently, India has been in the news for building and launching the world's cheapest mission to Mars. India has spent 75 million dollars (450 crore rupees) on its mission which is also equivalent to the production cost of four Bollywood films. The mission, if successful will not only boost India's National pride; making it the third country to successfully reach the red planet, but its findings will also help the world know more about our neighbouring planets.

But don't you think that before probing our neighbours we must deal with problems in our own household? What Krishan Lal, President of the Indian National Science Academy recently said answers this best: *"On the one hand, we have a space mission. On the other hand a large number of bullock carts. You can't say, remove all the bullock carts, then move into space. You have to move forward in all directions."*

What would have happened if Christopher Columbus had decided to be an innkeeper instead of an explorer? The simple fact is that every new step we make in space exploration advances our knowledge of not just the Universe but the new heights human innovation and technology can achieve. Humans have proved their existence as the most intelligent beings on the planet by achieving excellence in multifarious fields such as medicine, engineering, arts, and commerce. And with the accomplishments we have achieved by space research programmes, we have been able to prove the saying "Sky's the limit" both symbolically and literally wrong. And as famous astronomer, astrophysicist, cosmologist and author, Carl Sagan rightly said, "Somewhere, something is waiting to be known."

Poorvi Aggarwal
IX



The Trumpet

My Experience - Our Own Mars Mission

“Mars sways human imagination like no other planet in the solar system because it’s conditions are believed to be hospitable.”

The most difficult task was to decide the topic for the Class Assembly (CA). As we came nearer to 12th November 2013, the day we had our CA, launching of Mars Orbiter was like a boon. We couldn’t resist researching on **MOM: Mission On Mars**.

The research work was the most difficult thing as unfortunately the Internet service was not functioning in the school at that time. So I had to read a lot by borrowing newspapers from the library which was our only resource available. Over the weekend I somehow made the presentation and with the help of Madhur ma’am we had our final presentation ready.

Aashi got the opportunity to introduce the topic, “Mission Mars” and then began our mission.

Often visible as a reddish light in Earth’s sky, Fourth planet from the Sun, Mars captured the imagination of those who dream of space travel but scientists believe that conditions on Mars are more or less hospitable. The symbolic meaning of Mars, named after the Roman God of War, has the rotational period and seasonal cycles similar to those of our Mother Earth.

Here comes the mentioning of great achievement of ISRO and launching of **MangalYaan. Indian Space Research Organisation**, established in 1969, is headquartered in Bengaluru, and is under the administrative control of the Department of Space, Government of India. ISRO trusted PSLV (C-

25) rocket that delivered a perfect launch to India’s ambitions of reaching Red Planet. It’s the 25th successful mission and Longest PSLV mission for 44 minutes from Satish Dhawan Space Centre at Shriharikota in Andhra Pradesh on 5th November 2013 at 2.38 pm. It’s a 300-day, 780 million km journey to orbit the Red planet.

PSLV used 250 tonnes of propellant and final firing on 1st December 2013 catapulted the spacecraft out of its Earth bound orbit into Sun-centric orbit. On 24th September 2014, it is expected to re-orient to Mars orbit.

The main objectives of the 1st Indian Mission to Mars are:

- to develop the technologies required for design, planning, management and operations of an interplanetary mission.
- Exploration of Mars surface features, morphology, mineralogy and Martian atmosphere by indigenous scientific instruments.

For that there are five payloads in Mars Orbiter.

Payload is the carrying capacity of an aircraft or launch vehicle which may include cargo, passengers, flight crew or scientific instruments. In MOM the scientific equipments are

1. Color camera for optical imaging of the Earth’s surface.
2. A Methane sensor.
3. A thermal infrared camera to study geological activity.



The Trumpet

Question of the Month

1. A Lyman Alpha Photometer to study the Martian atmosphere.
2. And an equipment to study the neutral composition of the planet's upper atmosphere.

Sakshi ended quoting with Dr. Manmohan Singh's words: ***"This day shall go down as a landmark in our space program, a day which will inspire our scientists to make even greater strides in achieving our national goals in the field of space."***

I would like to thank Mr G.P Tiwari for explaining the technical terms and clarifying the student's queries.

Apoorv Khosla

X

Last month, we asked: ***What would you look for in a political leader while voting?***

"A leader should be educated. There is a difference between education and literacy, and when we elect a leader to a certain post, we are setting an example for the entire population. An uneducated leader is incapable of leading and living up to expectations. When voting, we should not be guided by a person's brand image, but in fact by his capabilities and his past track record."

Achal Mishra, XII

"A leader should not only be a man of action, but a man of words. He should ensure that all the promises he makes are actually translated into actions. Often, politicians make big talk, and yet are quick to engage in money making gimmicks as soon as they've won the elections. A transparent, active leader is what we need."

Radhika Khanna, XI

"Before anything a thorough background check is imperative. Simply speaking, we need to know that the man who's responsibility is of exercising political power in the world's largest democracy should not be a criminal, communalist, or crook. And being an 'anti-Modi activist' I must add that we should find out about his academic qualifications, and philosophically speaking, what he did in times of 'crisis'; whether he turned a deaf ear, or a blind eye to the situation, like Mr Modi did in 2002, or if he was ready to accept that he was accountable and responsible for the people who come under his constituency, state, or 'territory'.

Moving on, he should be capable; not a Rahul Gandhi, who's given a ticket to Amethi as a birthday gift from his mother. To conclude, he shouldn't be a Navjot Singh Sidhu either, with my intention being to state that he should be a man of action and not of words."

Rhitk Jassar, X



The Trumpet

Welcome 2014

With 2014 around the corner, it has been an year full of ups and downs. Yes, we've had our fair share of troubles, setbacks, and miscommunications. We've stumbled, we've delayed, we've been through some pretty sticky situations.

But the fact is, we made it through! We came out fighting, and we haven't given up on the Trumpet, and neither should you! For once school resumes after the break, and the new year 'hangover' ebbs away, we promise to make The Trumpet bigger and better than ever before!

But what use is a book if no one reads it? And so, to take The Trumpet to even greater heights, we will need the support of all Genesians. Whatever part you may form of The Trumpet Fraternity; student editors, regular correspondents, mentors, or even the equally important readers, your contributions will remain of the utmost importance to us!

Keep reading, keep writing, and please, keep sending your articles to The Trumpet. Let's not let its sound ever fade away.

2014 is our year. You guys rock.

The Trumpet Family

This month's question: ***Do you think firewalls on the Internet are justified?***

Send your answers to aritobose1@gmail.com



Saluting the Guests— photographed by Soumya Mahajan,XI

Mentored by	Mr Amar Nath Dar
Staff Editors	Reena Verma (English) Manoj Sharma (Hindi)
Student Editors	Aritro Bose/Achal Misra
Designed by	Aritro Bose